लोक नाट्य का स्वरूप एवं विशेषताएँ

प्रो0 पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

2020

लोक नाट्य का स्वरूप एवं विशेषताएँ

1. भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के १४वें अध्याय में लोकधर्मी नाट्य वृत्तियों का संकेत किया है। रूपक के दस भेदों में समवकार, व्यायोग, भाण और प्रहसन को लोकधर्मी माना है।

लोकनाट्य को जनपदीय नाटक, पारम्परिक नाटक (Traditional Drama) और आनुष्ठानिक आर्ट भी कहा जाता है।

2. नाटक और लोक नाटक में अन्तर–

(i) शास्त्रीय नाटकों में कथावस्तु, नेता, रस तथा अभिनय प्रमुख तत्त्व है जबकि लोकनाटक में लोककथा, गीत, नृत्य, मिथ (पुराण) तथा यथार्थ जीवन प्रसंग।

(ii) शास्त्रीय नाटकों के कथातत्त्व की अत्यन्त अपेक्षा होती है। उनमें कार्यावस्था, अर्थ प्रकृतियाँ एवं संधियों का निर्वाह आवश्यक है। किन्तु लोक नाटकों में कथा, गीत तथा नृत्य के तालमेल से प्रभावी बना, प्रस्तुत की जाती है।

(iii) शास्त्रीय नाटक में विशेष प्रकार के मंचों का संयोजन किया जाता है। यह मंच एक ओर से खुला होता है जबकि लोक नाटक खुले मंच पर अभिनीत होते हैं। मंच चारो ओर से खुला होता है।

(iv) शास्त्रीय नाटकों में पात्र परिवर्तन एवं प्रसाधन की आवश्यकता होती है किंतु लोक नाटक में नहीं।

(v) शास्त्रीय नाटकों की भाषा कृत्रिम तथा संस्कृतनिष्ठ होती है जबकि लोक नाटकों की भाषा साधारण होती है।

3. नुक्कड़ नाटक और लोक नाटकों में अन्तर–

(i) नुक्कड़ नाटक में लोक नाटक वाली सरल हार्दिकता नहीं है।

(ii) नुक्कड़ नाटक में लोकनाटक की रूढ़ियों का आभाव है।

(iii) नुक्कड़ नाटक किसी विशेष धारा से प्रभावित होने के कारण वैचारिकता का प्रमुख आग्रह लिए होते हैं। जबकि लोक नाटक धर्म, उपदेशात्मकता एवं मनोरंजनात्मक होते हैं।

(iv) नुक्कड़ नाटक किसी शैली विशेष से बद्ध नहीं होता है।

(v) नुक्कड़ नाटक का संदेश सिद्ध संदेश न होकर तात्कालिक होता है।

(vi) नुक्कड़ नाटक प्रतिशोध एवं विद्रोह की भावना से लिखे जा रहे हैं।

लोक नाटक का विकास

4. भारत में वेद, रामायण, महाभारत लोकनाट्य के मूल में है वहीं १६वीं सदी के पूर्वार्द्ध में वल्लभाचार्य की रासलीला, तुलसीदास की रामलीला और औरंगजेब के दरबार में प्रचलित स्वांग उल्लेखनीय है।

5. लोकनाटक की उत्पत्ति के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के विचार

(i) **डॉ0 रिजले के अनुसार–** डॉ रिजले का मानना है कि इसके मूल में मृतक पूजा है। अर्थात् अपने मृतक वीरों की आत्मा को प्रसन्न करने के लिए इनका उपयोग होता था।

(ii) **डॉ0 पिशेल** लोक नाटकों की उत्पत्ति 'कठपुतली' से मानते हैं।

(iii) **मैक्समूलर तथा लेवी** इनके मूल में ऋग्वेद को देखते हैं।

(iv) **कीथ–** ऋतु उत्सवों पर होने वाले नृत्यों इनके मूल में मानते हैं।

6. लोकनाट्य के अंग

डॉ0 सत्येन्द्र की दृष्टि में–

(i) अखाड़ा– गुरू, गायक, संगीत, रचयिता।

(ii) अभ्यास

(iii) संगीत

(iv) रंगमंच

(v) विज्ञापन प्रबंध

7. लोकनाट्य के प्रकार

डॉ0 श्याम परमार के अनुसार–

(i) सामयिक लघु प्रहसन नाटिका– प्रहसन, स्वांग, भाँड़, भडैवी

(ii) मध्यरात्रि से आरंभ होकर प्रातःकाल तक अभिनीत गीतिनाट्य– धार्मिक, ऐतिहासिक, लौकिक।

डॉ0 सत्येन्द्र के अनुसार–

(i) नृत्य प्रधान– रस

(ii) नाट्य हास्य प्रधान– भाण

(iii) संगीत प्रधान– भगत, पांच, चैरेमी

(iv) नाट्यवार्ता प्रधान–

विषयवस्तु की दृष्टि–

(i) धार्मिक, ऐतिहासिक, किवदंतियों पर आधारित।

(ii) नृत्य प्रधान

(iii) संगीत प्रधान

(iv) हास्य प्रधान

(v) नाट्य वार्ता

४. लोक नाट्य की विशेषताएँ

प्रख्यात रंगकर्मी बी0जी0 कारंत के अनुसार–

(i) लोकनाटक के पीछे कोई शास्त्रीय योजना नहीं होती ये लोकमानस के प्रतिबिम्ब हैं।

(ii) लोकनाटक में वैयक्तिकता के स्थान पर सामूहिक अभिव्यक्ति विद्यमान रहती है।

(iii) शीघ्र सम्प्रेषणीयता लोक नाटक की प्रमुख विशेषता है।

(iv) कल्पनात्मकता एवं साधारणीकरण लोक नाट्य की विशेषता है।

(v) लोक नाटक भाषाई होते हैं। बोली का विशेष महत्त्व है। अतः प्रादेशिक स्वरूप इनकी विशेषता है।

9. लोक नाट्य की सर्वस्वीकृत विशेषताएँ

(i) लोक नाटक व्यक्ति की कृति न होकर समूह की कृति है।

(ii) लोक जीवन के अधिक निकट रहते हैं।

(iii) लोक नाट्यों की भाषा क्षेत्रीय एवं सरल होती है।

(iv) लोक नाटक में लम्बे कथोपकथनों का अभाव होता है।

(v) कथानक परिचित ऐतिहासिक, पौराणिक या सामाजिक होता है।

(vi) पात्र अधिकांशतः घरेलू चरित्र को लेकर उपस्थित होते हैं- सौतन, झगड़ालू सास, ननद, भौजाई, गुलाम पति, खुसामदी दरबारी, बूढ़ा दूल्हा, पाखंडी साधु आदि। लोक नाट्य में स्त्रियों के पात्र को भी पुरूष पात्र नियोजित करते हैं।

(vii) लोक नाट्य में तड़क भड़क की अपेक्षा अभिनय पर विशेष बल दिया जाता है।

(viii) प्रसाधन सामग्री के रूप में आसानी से सुलभ कोयला, काजल, खड़िया आदि का प्रयोग लोक कलाकार करता है।

(ix) लोक नाट्य का रंगमंच खुला होता है पट परिवर्तन का विधान नहीं है।

(x) नाटक के शास्त्रीय विधानों का अभाव होता है।

(xi) लोक नाट्य का उद्देश्य मनोरंजन के साथ साथ उचित सीख देना भी है।

(xii) लोक नाट्य में गीतात्मक तथा लयात्मक एवं तुकान्तक संवाद प्रमुख तत्त्व हैं।

(xiii) पात्र प्रायः एक समान होते हैं।

(xiv) लोक नाट्य में हास्य, उपदेश, प्रेम का निरूपण प्रमुख हैं।

(xv) लोक नाट्य में कथानक ढीला होता है। पूर्वार्द्ध विलम्बित गति में तो अन्त द्रुत अस्वाभाविक गति से होता है।

(xvi) लोक नाटक में प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य कर सकता है। जैसे– मंचसज्जा, अभिनय, वेश और श्रृंगार आदि।

10. अवध के प्रसिद्ध लोकनाट्य

कठपुतली, स्वांग, बहुरूपिया, नकटौरा, रामलीला, भांड-भडैंती, रहस या रास

धन्यवाद